यहूदियों ने यीशु को क्यों ठुकराया

''वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।''; ''इसका लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो'' (मत्ती 27:22ख, 25ख)। पूरे इतिहास में, अपने ही लोगों द्वारा यीशु को ठुकराने की कोई मिसाल नहीं है। हम उनके इस चरम को क्या कह सकते हैं? यहूदी लोग अपने मसीहा की राह देख रहे थे, अत: जब वह आ गया तो उन्होंने उसे क्यों ठुकरा दिया?

उसने उन्हें निराश किया

यीशु यहूदियों के लिए निराशा था। उन्होंने उसके आने से पहले ही मसायाह के बारे में अपने विचार बना लिए थे। उन्होंने सांचा तैयार कर लिया था और प्रतीक्षा कर रहे थे। जब उसने उनके सांचे में आने से इन्कार कर दिया, तो वे बहुत निराश हो गए। पुराने नियम में उन्होंने आने वाले राजा की भविष्यवाणियां पढ़ी थीं, जिसने दाऊद के सिंहासन पर बैठना था और उन्होंने इन भविष्यवाणियों का अर्थ मूल शब्दों के अनुसार निकाल लिया था। उन्हें एक सांसारिक राजा के आने की उम्मीद थी। एक समय यीशु उनसे इसलिए ''छिपा'' (यूहन्ना 8:59) था क्योंकि वे उसे जबरदस्ती राजा बनाने की कोशिश कर रहे थे (यूहन्ना 6:15)। राज्य की यह अवधारणा चेलों में भी पाई जाती थी। वे झगड़ते रहते थे कि राज्य में बड़ा कौन होगा। यीशु की मृत्यु के बाद, प्रेरितों ने विलाप किया, ''हमें आशा थी, कि यही इस्राएल को छुटकारा देगा'' (लूका 24:21)। प्रेरितों 1 की बातचीत से प्रकट होता है कि चेले पुनरुत्थान के बाद भी राज्य के स्वभाव को नहीं समझते थे।

यहूदी लोग उस समय निराश हो गए थे जब यीशु ने उन्हें बताया कि उसका राज्य इस जगत का नहीं है। उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह कैसर का प्रतिद्वंद्वी नहीं था, परन्तु वे वैसा राज्य ही चाहते थे। उन्होंने पहले से तय कर लिया था अर्थात उन्होंने पूर्वधारणा बना ली थी। यीशु को ग्रहण करने में पूर्वधारणा आज भी रुकावट डालती है। उन्होंने उसकी बात को परखने से पहले ही अपने मनों में ठहरा लिया था कि क्या करना है अर्थात यह कि यदि वह उनकी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता, तो वे उससे मुंह मोड़ लेंगे।

उसने उनके भौतिकवाद की निन्दा की

यीशु ने भौतिकवादी सोच और जीवन की निन्दा की थी, और लोग अपनी जीवन शैली पर हुए इस आक्रमण से नाराज हो गए। हम यीशु के गलील सागर को पार करते और गिरासेनियों के देश में जाने के विषय में पढ़ते हैं (लूका 8:26-39; मरकुस 5:1-20)। एक आदमी जिसमें बहुत सी दुष्ट आत्माएं थीं किश्ती में उससे मिला। यीशु ने उस आदमी को चंगा कर दिया और दुष्टात्माओं को सूअरों के झुण्ड में डाल दिया था। सूअरों के डूब जाने पर उनके मालिकों ने यीशु को देश छोड़ने के लिए कहा। दो हज़ार सूअरों की हानि होना एक बहुत बड़ा नुकसान था। उनके लिए इस बात का कोई महत्व नहीं था कि एक व्यक्ति होश में आकर अपने कपड़े पहने हुए था।

यीशु की शिक्षाओं से भौतिकवादी और दिखावे की आत्मिकता में कमी आ गई। यीशु ने धन की खोज की व्यर्थता के बारे में बहुत कुछ कहना था। उसने विचार करने वाले प्रश्न खड़े किए: ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?'' (मत्ती 16:26)। उसने ज़ोर देकर कहा कि आत्मिक सम्बन्ध शारीरिक सम्बन्धों से मजबूत हैं और शरीर से बढ़कर प्राण को महत्व दिया जाना चाहिए। उसने सिखाया कि स्वर्ग का राज्य पृथ्वी के राज्यों से श्रेष्ठ है और परमेश्वर कैसर से ऊपर है। जीवन को मांस और लहू मानने के इच्छुक लोगों ने उसे स्वीकार नहीं करना था! आज भी उन लोगों में कोई अन्तर नहीं है: परमेश्वर से बढ़कर वस्तुओं से प्रेम करने वालों के लिए मसीह की शिक्षाएं ठोकर हैं और वे उसे ठुकरा देते हैं!

उसने उनकी परम्पराओं की निन्दा की

यीशु ने अपने समय की धार्मिक रीतियों तथा परम्पराओं की निन्दा की। फरीसी और सदूकी लोग यहूदी पंथों में सबसे प्रसिद्ध थे। यीशु ने उन पर आरोप लगाया कि उनके मन तो परमेश्वर से दूर हैं परन्तु होंठों से वे उसकी आराधना करते हैं। उसने उनकी आराधना को व्यर्थ में की गई उपासना का नाम दिया क्योंकि यह मनुष्य की आज्ञाओं के अुनसार थी (मरकुस 7:6, 7)। उसने उन्हें कपटी कहा था।

यहूदी लोगों को यीशु के आने से ठोकर तो लगी थी, परन्तु उनकी सबसे बड़ी आपत्ति उसके द्वारा सिखाई गई सकारात्मक सच्चाइयां थीं। उसकी बहुत सी सच्चाइयां क्रांतिकारी थीं और उनके लिए उन्हें सहन करना कठिन था, परन्तु वास्तविक समस्या यह नहीं थी। झूठ को सामने लाने के कारण ही लोगों को उससे ठोकर लगी थी, क्योंकि वे बदलने को तैयार नहीं थे। उसकी बातें आज भी आग लगाने वाली हैं। यीशु की शिक्षाओं का एक उद्देश्य मनुष्य द्वारा बनाए गए धर्मों को उखाड़ना था जिनमें भांति-भांति की रीतियां, आडम्बर, और दिखावे थे। यहूदियों की धार्मिक प्रथाओं की निन्दा के कारण, उन्होंने यीशु को ठुकरा दिया था।

गलत को गलत कहने पर आज भी लोग ठोकर खाते हैं। लगता नहीं कि वे सोच सकते हैं कि किसी व्यक्ति में मसीह का मन हो और वह आधुनिक धार्मिक शिक्षा या व्यवहार की

आलोचना करने वाला हो। परन्तु, यदि कोई मसीह जैसा बनना चाहता है तो उसके लिए गलत शिक्षा की निन्दा करना *आवश्यक* है! कई लोगों को लगता है कि मसीह जैसा मन होने का अर्थ इतना अच्छा दिखाई देना है कि किसी भी बात से असहमत न हो, परन्तु मसीह के मन के विषय में उनकी यह धारणा गलत है!

वह उनकी पसन्द के लिए अधिक ही दीन था

यहूदियों ने यीशु को उसके दीन परिवार और उसकी सादगी के कारण ठुकराया था। उन्होंने यह अपेक्षा कदापि नहीं की थी कि वह नासरत से निकलेगा। राजा बनने के लिए उन्हें उसके बैतलहम में जन्म लेने की अपेक्षा नहीं थी। जब यीशु आश्चर्यकर्म करता हुआ अपने देश में आया, तो लोग कहने लगे, ''क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं?'' (मत्ती 13:55क)। यीशु बहुत ही स्पष्ट और विनम्र था!

लोगों के विश्वास को परखने के लिए, यीशु ने उन्हें करने के लिए कुछ आसान से काम दिए थे। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 9:6, 7 में उसने अंधे भिखारी को जाकर अपनी आंखों से मिट्टी धोने के लिए कहा। पौलुस ने गवाही दी कि परमेश्वर ने संसार के मूर्खों को चुन लिया ताकि बुद्धिमानों को मूर्ख ठहराए (1 कुरिन्थियों 1:27, 28)।

पुराने नियम में इसी सिद्धांत का एक उत्कृष्ट उदाहरण नामान की कहानी है (2 राजा 5)। जब भविष्यवक्ता ने नामान को कोढ़ से चंगा होने के लिए कुछ करने के लिए कहा तो वह नाराज़ क्यों हो गया था? शायद उस काम को करने की सादगी के कारण जो उसे कहा गया था! उसे यरदन नदी में डुबकी लगानी थी! आज परमेश्वर का मार्ग इतना सरल है कि बहुतों के लिए, विशेषकर जो एक दिखावटी धर्म चाहते हैं, जो चकाचौंध करने वाले राज्य की लालसा रखते हैं, उन्हें मसीह के साधारण से राज्य से शर्म आती है। यदि मसीह इस समय पृथ्वी पर होता, तो उन्हें उससे भी शर्म आती! यही एक बड़ा कारण है कि मसीह के धर्म में बहुत से लोग मिलते जाते हैं और इसमें से बहुत से लोग निकलते हैं। प्रभु भोज की सादगी के कारण बहुत से लोग इसका इन्कार करते हैं। बहुत से लोगों के लिए बपतिस्मा इतनी मूर्खतापूर्ण बात लगती है कि वे मसीह से फिरकर उसे ठुकरा देते हैं। यदि आप ने परमेश्वर को प्रसन्न करना हो, तो कभी भी उस सादगी से जो मसीह में है, असंतुष्ट न हों। पौलुस ने मसीही लोगों को चेतावनी दी कि ''तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएं'' (2 कुरिन्थियों 11:3)।

सारांश

क्या हमने अपने लिए यीशु और उसकी इच्छा को ठुकरा दिया है? क्या वह हमारी अपेक्षाओं को पूरा करने में असफल है? क्या हम निराश हैं क्योंकि वह हमारे भौतिकवाद और मनुष्यों द्वारा बनाई गई धार्मिक रीतियों की निन्दा करता है? क्या हमने उसकी उस सादगी को ठुकराया है जिसमें वह हमें काम करने के लिए कहता है? हमें चाहिए कि हम पहली शताब्दी के यहूदियों की तरह उसे न ठुकराएं।